2. खेती की शुरुआत

आज हम खेती करते हैं और खेती से हमें भोजन मिलता है। पर तुम जानते हो कि शुरू में मनुष्य सिर्फ शिकार कर के, व जंगली फल और जंगली अनाज बटोर कर जीता था। दुनिया में कहीं खेती नहीं होती थी।

कैसे किसी झुंड ने सोचा होगा कि वह शिकार व जंगली फल बटोरना छोड़ कर खेती करने लगे! कैसे झुंड के सब लोग माने होंगे? क्या हुआ होगा? क्यों हुआ होगा? कक्षा में चर्चा करो।

शिकारी मानव के समय लोग कुछ भी नहीं उगाते थे और सब कुछ जंगलों से बटोर लाते थे। वे जो अनाज, फल, सब्ज़ी या कन्द खाते थे, सब जंगली ही उगते थे। उन्हें कोई बोता नहीं था। न ही उनकी कोई देखभाल करता था। बस जब अनाज या फल पक जाते, तो लोग उन्हें काट कर खा लेते थे। ऐसा लाखों सालों तक चलता रहा।

आज भी हम कई ऐसी चीज़ों को खाते हैं, जो जंगली उगती हैं।

हम जंगलों से इस तरह के कई अनाज, फल, सब्ज़ी, पत्ते और कन्द बटोर कर लाते हैं। क्या तुम ऐसी चीज़ों की सूची बना सकते हो?

जो शिकारी लोग लाखों सालों से जंगली फल व अनाज बटोरते थे, उन्हें मालूम तो होगा कि कैसे बीज से पौधा उगता है। उन्होंने आसपास ऐसे खूब सारे पौधों को उगते देखा होगा। मगर फिर भी उन्होंने खेती शुरू नहीं की। इस का क्या कारण रहा होगा? और जिन लोगों ने खेती शुरू की उनको क्या ज़रूरत पड़ी होगी कि वे खेती करने लगे?

यह सब हम पता नहीं कर सकते, फिर भी उन दिनों के जो निशान और सबूत मिलते हैं उनसे हम कुछ अंदाज़ा लगा सकते हैं। इन्हीं **सबूतों के आधार** पर हम यहां एक कहानी तुम्हें सुना रहे हैं। चलो कल्पना करके देखें कैसे हुई होगी खेती की शुरुआत।

कहानी – सुंगा झुंड

तो कल्पना करो कि बहुत समय पहले एक शिकारी झुंड था। झुंड का नाम रखते हैं सुंगा झुंड। एक समय की बात है। सुंगा झुंड के लोग जहां रहते थे वो जगह ऐसी दिखती थी जैसी अगले पृष्ठ के चित्र में दिख रही है।

इस जगह पर खाने को क्या-क्या मिलेगा?

यहां जंगली बीज और दाने कहां मिलेंगे?

क्या नदी से भी कुछ खाने की चीज़ें मिल सकती हैं ?

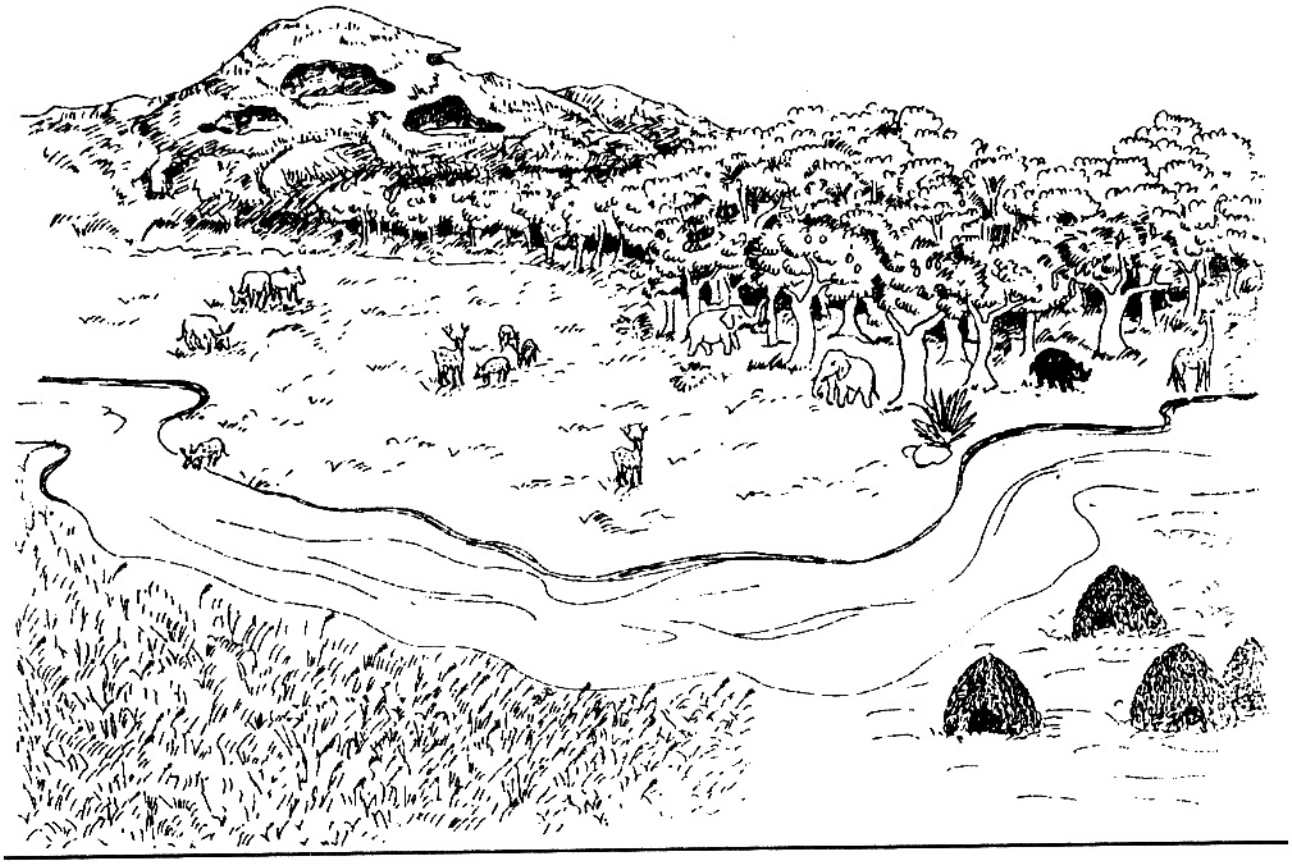

जंगली फल कहां मिलेंगे?

शिकार के लिये जानवरों का इन्तज़ार कहां किया जाएगा?

सुंगा झुंड के लोग इस इलाके के कोने-कोने को जानते थे। किस पेड़ से कब फल मिलेंगे, किस पौधे से कब जड़ मिलेंगी, किस घास के बीज कब लगेंगे, किस बिल में खरगोश रहता है, हिरण और बारासिंगा चरने कहां आते हैं, नदी में मछली और केंकड़े कब आएंगे - यह सब उन्हें पता था। यहां साल भर वे कहीं न कहीं से अपना भोजन जुटा लेते थे। अब उन्होंने भोजन की तलाश में नई-नई जगह घूमना छोड़ दिया था। बस, जब नदी में बाढ़ आ जाती तो वे पहाड़ पर चढ़ जाते। कुछ समय बाद फिर नीचे उतर आते। सुंगा झुंड के पूर्वजों को जंगल का इतना बारीक ज्ञान न था। वे भोजन के लिए बड़े-बड़े जानवरों का पीछा करते हुए जगह-जगह भटकते थे। पर सुंगा झुंड को अब इस जंगल की इतनी जानकारी हो गई थी कि साल भर का भोजन यहीं से जुटा लेते थे। इसलिए वे यहां कच्ची झोपड़ियां डाल कर रहने लगे थे। क्या तुम्हें चित्र में उनकी झोपड़ियां दिख रही हैं?

सही विकल्प चुनो-

सुंगा झुंड के लोग एक जगह रहते थे क्योंकि -

1. वे खेती करते थे। 2. वे सिर्फ बड़े जानवरों का शिकार करते थे। 3. वे जंगल में कई चीज़ों से भोजन जुटा लेते थे। 4. वे घर बनाने लगे थे।

करमी के झुंड ओर सुंगा झुंड के जीवन में क्या समानताएं थीं और क्या अंतर थे?

बोमा गोमा की खोज

सुंगा झुंड में दो बच्चे थे। बोमा और उसकी बहन गोमा। दोनों को अनाज के दाने भिगो कर खाना बहुत पसंद था।

एक दिन वे नदी किनारे बैठ कर दाने खा

रहे थे कि अचानक जंगली कुत्ता आ गया। मारे डर के दोनों भाग पड़े।

कुछ दिन बाद जब नदी किनारे गए तो देखा वहां नए-नए अनाज के पौधे उगे हैं।

गोमा बोली, "यहां हमसे दाने छूट गए थे। क्या उनको चिड़िया ले गई?"

बोमा बोला, "नहीं, मुझे लगता है कि उन्हीं में से ये पौधे निकले हैं - जैसे बरसात के मौसम

में आम की गुठली से पेड़ निकलता है।"

गोमा बोली, "फिर से फेंक कर देखें?"

तो दोनों मां के पास गए और दाने मांगे। पर मां ने दाने देने से मना कर दिया। वह बोली, "इतनी मुश्किल से दाने इकट्ठे किए हैं। इनसे कई दिनों तक काम चलाना है।" फिर भी, अगले दिन बोमा गोमा ने चुपके से कुछ दाने उठाए और घर के पीछे फेंक दिए।

वे रोज़ देखने जाते कि पौधे उगे कि नहीं। पर गर्मी का मौसम था। सूखी मिट्टी में दाने पड़े रहे। पक्षी और कीड़े उन्हें खा गए। बोमा और गोमा सोचते रहे। फिर उन्हें एक उपाय सूझा। गोमा बोली, "दानों को मिट्टी से ढक देते हैं। फिर पक्षी उन्हें नहीं खाएंगे।"

बोमा बोला, "हां, और उन पर पानी डालते हैं। शायद पानी मिलने पर ही पौधे उगते हों।"

उन्होंने फिर से बीज बोए और नदी से पानी ला कर बीजों पर डाला। कुछ दिनों में पौधे उग निकले। बोमा गोमा की खुशी का ठिकाना न था। वे हर दिन पौधों को बड़ा होते देखते रहे।

खेती-बाड़ी की ये बातें आज हमें बड़ी सीधी-सादी भले ही लगें, पर एक समय मनुष्य ने बहुत धीरे-धीरे उन्हें खोजा और समझा था।

कुछ महीनों में बोमा गोमा के पौधों पर दाने लगे। अगर सुंगा झुंड अपने पूर्वजों की तरह घूमता रहता तो शायद बोमा गोमा अपने पौधों पर दानों का लगना न देख पाते। पर अब तो सुंगा झुंड एक ही जगह रहता था।

'जंगली अनाज काफी है'

बोमा-गोमा ने जब अपने पौधों पर दाने लगे देखे तो उन्होंने एक-दूसरे से कहा, "अरे सचमुच यहां तो दाने बन गए!" वे दाने इकट्ठा कर के घर भागे। वे खुशी से चिल्लाते जाते, "देखो हमने अनाज बना लिया, हमने अनाज बना लिया।"

झुंड के लोग बोमा और गोमा की बातें सुन कर हंसने लगे। बोले, "यहां इतना अनाज घासों पर लगा है। काटो और खाओ! अनाज का क्या बनाना?"

पर बोमा-गोमा के मन से अनाज की धुन नहीं उतरी। जब भी मौका मिलता, तरह-तरह के दाने बचा कर रख लेते। इसी तरह बहुत दिन और बीते।

क्या अजीब बात है। खेती कैसे कर सकते हैं- इसका पता भी चल गया, फिर भी सुंगा झुंड के लोगों को खेती करने में रुचि क्यों नहीं हुई? क्या तुम कारण समझ सके?

चलो आगे देखें क्या हुआ।

नई जगह की कठिनाइयां

एक दिन अचानक शिकारियों का दूसरा कोई झुंड वहां आया जहां सुंगा झुण्ड रहता था और सुंगा झुंड से लड़ने लगा। सुंगा लोग दूसरे झुंड के सामने टिक नहीं पाये और भाग खड़े हुये। वे भागते-भागते दूर निकल गए।

फिर वे जहां रहने लगे वहां बहुत कठिनाइयां थीं। ज़रा-सी एक नदी बहती थी। वहां न जानवर आते थे, न ही फलों के घने पेड़ थे। नदी किनारे जो घास उगती थी, उसके दाने खाने लायक नहीं थे। सुंगा झुंड के लोग अब क्या करते? वे ज़्यादातर मछली और केकड़े खा कर गुज़ारा करने की कोशिश करने लगे।

वाक्य पूरा करो-

1. सुंगा झुण्ड के लोगों को अपनी पुरानी जगह से दूसरी जगह जाना पड़ा क्योंकि .....

2. नई जगह पर खाने के लिये ..... नहीं मिलते थे, केवल ..... मिलते थे।

बोमा-गोमा की कोशिश

एक दिन बोमा-गोमा अपनी मां से बोले, 'सब लोग परेशान क्यों हो रहे हैं? हमें तो अनाज बनाना आता है। एक दाना बोने से कई सारे दाने

मिलते हैं। चलो न मां, कुछ दाने मिट्टी में डालें, उन्हें उगाएं।"

मां बोली, "पहले ही अनाज के दाने बहुत कम बचे हैं। उन्हें मिट्टी में फेक दें? नहीं नहीं।"

बोमा-गोमा ने हार नहीं मानी। उन्होंने भी कुछ दाने बचा कर रखे थे। उन्हें ही मिट्टी में डाल दिया और नदी से पानी ला ला कर सींचा। कुछ दिनों में पौधे निकलने लगे। पर यह क्या? पौधे उगे ही थे कि मुरझाने लगे। बोमा-गोमा बहुत दुखी हुए।

उनकी बूढ़ी अम्मा कुछ दिनों से उनकी करतूतें देख रही थी और शायद समझ भी रही थी। बोमा गोमा को परेशान खड़ा देख कर, वह अपनी झोंपड़ी से निकल आई। उनके पास आकर कुछ देर पौधों को देख, सोचती रही। फिर बोली, "कहीं ऐसा तो नहीं कि आस-पास उगी घास पौधों को बढ़ने नहीं दे रही? चलो इसे खोद कर हटा दें।"

तीनों ने मिल कर ऐसा ही किया। नुकीली लकड़ी से एक जगह की घास खोद कर हटा दी। साफ मिट्टी पर फिर से अनाज के दाने बोए और पानी दिया।

नुकीली लकड़ी से उन दिनों और क्या-क्या किया जाता था?

सुंगा झुंड ने खेती अपनाई

इस बार जब पौधे उगे तो आसानी से बढ़ने लगे। झुंड के सारे लोग देखने आए। सब बहुत खुश हुए। खूब नाचे गाए। फिर रोज़ देखने आते कि पौधे कैसे बढ़ते हैं।

दो-तीन महीने बाद पौधों पर बीज लगे। फिर बीज पके। सब लोग मिल कर उन्हें काटने चले।

बूढ़ी अम्मा ने कहा, "देखो ध्यान रहे - जिन पौधों में खूब सारे बीज लगे हैं और अच्छे दाने लगे हैं, उन्हें अलग से काटो। उनके बीज को हम अगली बार बोयेंगे। तब अगली बार और ज़्यादा अनाज हमें मिलेगा।"

जब सब अनाज कटा तो लोगों ने पाया कि एक टोकरी भर अनाज हो गया है । एक मुट्ठी भर कर अनाज बोया था। एक टोकरी भर कर निकला।

सबने बोमा-गोमा को शाबाशी दी। अब सबने कहा, "अगली बार दस

मुट्ठी अनाज बोएंगे। देखें, कितना निकलता है। इस जगह पर अनाज की घास नहीं थी। पर अब हम बो कर उगा लेंगे।" इस तरह सुंगा झुंड ने खेती करनी शुरू की।

सुंगा झुंड के लोगों ने अनाज किस चीज़ से काटा होगा?

यह औज़ार पहले उनके किस काम आता था?

वाक्य पूरा करो :

नई जगह पर सुंगा झुंड ने खेती शुरू की क्योंकि _____।

किसने शुरू की, कहां की और कब की

सबसे पहले खेती किसने शुरू की और कहां शुरू की? बोमा गोमा की बात तो एक कहानी है। वास्तव में सबसे पहले खेती की शुरुआत ईरान और ईराक देश की पहाड़ियों की **तलहटी** में हुई। आज से 8000-10000 साल पहले वहां रहने वाले लोगों ने सबसे पहले खेती करना शुरू किया। बाद में जगह-जगह कई शिकारी लोगों ने अपने यहां खेती करनी शुरू की। अपने देश में खेती की शुरुआत आज से 5-6 हज़ार साल पहले हुई।

जैसे सुंगा झुंड था वैसे शिकारियों के और भी कई झुंड थे। धीरे-धीरे उन्हें पौधों को उगाने के बारे में कई बातें पता भी चल गईं थीं। ख़ासकर, झुंड की औरतों को पेड़-पौधों के बारे में काफी ज्ञान रहता था। यह इसलिए क्योंकि आमतौर पर जंगली फल, दानें, जड़ें, आदि इकट्ठा करने का काम वे ही किया करती थीं। पेड़-पौधों को करीब से देखते-देखते वे उनके बारे में काफी कुछ समझने लगीं थीं। जब ज़रूरत पड़ी तो उन्होंने इस जानकारी का उपयोग किया और खुद पौधे उगाना शुरू किया।

क्या सभी झुंडों ने खेती अपनाई?

कई झुंडों ने खेती शुरू कर दी। फिर भी कई और झुंड शिकार कर के, व जंगली फल आदि बटोर के ही रहते रहे। उन्हें खेती अपनाने की ज़रूरत ही नहीं लगी।

सुंगा झुंड को भगा कर उनकी पुरानी जगह पर दूसरा झुंड रहने लगा था। क्या उस झुंड ने भी खेती शुरू की होगी? सोच कर बताओ।

यह तो तुमने भी देखा होगा कि जब कोई नई चीज़ आती है तो सब लोग उसे एक साथ नहीं अपनाते।

जंगली गेहूं

आज का गेहूं

जंगली मक्का आज का मक्का

दूसरे जंगली अनाज

जब ट्रेक्टर आया तो क्या सब किसानों ने ट्रेक्टर खरीद लिया?

जब मोटर-सायकिल आई तो बैलगाड़ी और सायकिल का उपयोग क्या बन्द हो गया?

इन बातों के क्या कारण हैं?

आज भी दुनिया में कहीं-कहीं ऐसे झुंड हैं जो शुरू से लेकर आज तक शिकार व बटोरने का काम ही करते आ रहे हैं। उनके चारों तरफ खेती, व्यापार, कारखाने शुरू हो गए हैं। पर वे अभी भी जंगलों में शिकार करके जीते हैं।

अपनी-अपनी परिस्थिति और ज़रूरत के अनुसार अलग-अलग झुंडों ने काम किया। दुनिया भर के झुंड एक साथ खेती करने लगे हों, ऐसा नहीं था। किसी झुंड ने पहले खेती शुरू की तो किसी झुंड ने बाद में और किसी झुंड ने आज तक नहीं की।

किसी झुंड ने जौ के पौधे उगाने शुरू किए क्योंकि उसके इलाके में जंगली जौ ही उगती थी। किसी झुंड ने मक्के की खेती शुरू की क्योंकि उसके इलाके में जंगली मक्का ही मिलता था। कहीं शकरकंद उगाया जाने लगा, कहीं गेहूं। इस तरह धीरे-धीरे दुनिया में खेती फैलने लगी।

अभ्यास के प्रश्न

1. शिकार करते हुए भी किसी झुंड के लोग एक जगह बस के कैसे रह सकते थे? समझाओ।
2. बोमा-गोमा ने अनाज उगाने के बारे में क्या-क्या बातें सीखीं थीं?
3. पुरानी जगह पर झुंड के लोगों ने अनाज बोने से मना क्यों किया था? नई जगह पर वे अनाज बोने को तैयार क्यों हो गये थे?
4. क) खुदाई करने से मिली जानकारी के अनुसार खेती की शुरुआत सबसे पहले कहां हुयी थी?

   ख) पाठ पढ़ने से पहले तुम खेती की शुरुआत के बारे में क्या सोचते थे? पाठ पढ़ के तुम्हें क्या बातें पता चलीं? अगर तुम्हारे मन में इसके बारे में कुछ और प्रश्न हों तो **सवालीराम** को लिख के पूछो।

   ग) खेती की शरुआत के बारे में यहां दिये अंश को पढ़ो और उसे पूरा करो।

   खेती की शुरुआत कैसे हुई होगी?

   पहले सभी झुंड जंगल से शिकार और फल लाते थे। वे जंगल में उगने वाला अनाज भी बटोर कर खाते थे। जब तक किसी झुंड को ये चीज़ें ठीक से मिलती रही होंगी तब तक वह झुंड इसी तरह रहता रहा होगा। पर अगर .....
5. सही गलत बताओ -

   (क) सुंगा झुंड से सीख कर ही दुनिया के सब झुंडों ने खेती करना शुरू कर दिया।

   (ख) सब झुंडों में बोमा गोमा जैसे बच्चों ने खेती की खोज की।

   (ग) खेती शुरू करने के काम में आम-तौर पर झुंड की औरतें आगे रही होंगी।

   (घ) अलग-अलग झुंडों ने अलग-अलग समय पर खेती अपनाई।

   (ड) शुरू-शुरू में सब झुंड गेहूं की खेती किया करते थे।

तब से अब तक .... जोतना, बोना, काटना...

यहां खेती के पुराने और नये औज़ारों के चित्र मिले हुए हैं। तुम इन्हें छांट कर अलग-अलग करो और नीचे की तालिका में लिखो कि सबसे पुराना, फिर उससे नया और सबसे नया औज़ार कौन सा है -

ट्रेक्टर से बोनी

नुकीली लकड़ी

	जोतने का औज़ार	बोने का औज़ार	काटने का औज़ार
सबसे पुराना			
उससे नया			
सबसे नया			

हार्वेस्टर से कटाई

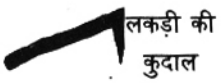

हल

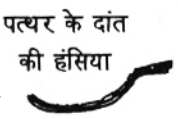

ट्रेक्टर

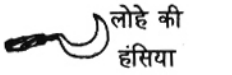

मनुष्य ने जानवर पालना शुरू किया

जैसे मनुष्य ने कभी खेती शुरू की, वैसे ही कभी जानवरों को पालतू बनाना भी शुरू किया। जिस समय खेती की शुरुआत हुई लगभग उसी समय **पशुपालन** भी शुरू हुआ। किसी झुंड ने जंगली गाय को पालतू बनाया तो किसी और झुंड ने भेड़ और बकरी को पालना शुरू किया। जानवर का शिकार करते-करते क्यों और कैसे मनुष्य उसे पालने लगा - इस बात का तो हम अंदाज़ा ही लगा सकते हैं।

शायद ऐसा होता था कि शिकार करते वक्त जंगली जानवरों के नन्हें बच्चे शिकारी लोगों की पकड़ में आ जाते थे। मरे हुए जानवर के साथ-साथ शिकारी लोग जानवरों के बच्चों को भी ज़िन्दा पकड़ के अपने डेरे में ले आते थे। वे यह सोचते थे कि जब शिकार हाथ नहीं आएगा तब इन ज़िन्दा जानवरों को मार कर खा लेंगे। इस तरह शिकारी लोग भेड़ों व बकरियों के नन्हें मेमनों को, नन्हें

बछड़ों व बछियाओं और दूसरे जानवरों के बच्चों को अपने पास बांध के रखने लगे। उन्हें खिलाने पिलाने लगे। फिर धीरे-धीरे उन्होंने समझा कि इन जानवरों को मार कर खा लेने की बजाए यदि ज़िन्दा पाला जाए तो बहुत से नए-नए फायदे मिल सकते हैं। इस तरह लोग पशुओं को पालने लगे।

पशुपालन अपनाने के कारण लोगों को कई नई चीज़ें मिलीं। पशुओं से कई कामों में मदद मिली। पशुओं की देख-रेख के लिए मनुष्य को कई नए काम भी करने पड़े।

पशुपालन के काम

नीचे दी गई सूची में से पहचानो कि इनमें से कौन से काम तब शुरू हुए जब मनुष्य पशुपालन करने लगा? उन कामों को अलग करके लिखो।

जानवर के चारे का इंतज़ाम, जानवर को मारने के लिए घेरना, जानवर के पीने के पानी का इंतज़ाम करना, मरे जानवर को कंधे पर ढो कर लाना, बीमार जानवर का इलाज़ कराना, जानवर को नहलाना, मरे जानवर की खाल उतारना, जानवर के रहने की जगह बनाना, थके जानवर को सुस्ताने देना, थके जानवर पर वार करना, जानवरों की दूसरे जानवरों से रक्षा करना, जानवरों को चोरी-डकैती से बचाना, मरे जानवर के सींग निकालना, जानवर का मांस काटना, दूध दुहना, जानवर के बच्चों के जन्म में मदद करना।

पशुपालन से लाभ

पशु पालना शुरू करने के बाद मनुष्य को कई तरह के लाभ भी मिलने लगे। पालतू पशुओं से हमें किस तरह के लाभ मिलते हैं, यह तो तुम जानते ही हो।

नीचे बताई बातों में से वे कौन से लाभ हैं जो मनुष्य को पशुपालन करने के बाद ही मिलने लगे?

दूध, मांस, घी, चरबी, दही, खाल, ऊन, हड्डी की चीज़ें, सींग की चीज़ें, गाड़ी खींचने की सहायता, सामान ढोने की सहायता, हल खींचने की सहायता।

पशुओं से मनुष्य को तरह-तरह की चीज़ें मिलने लगीं। पर यही नहीं। कई पशुओं की ताकत भी मनुष्य के काम आने लगी। जैसे– बैल, भैंस, ऊंट, घोड़ा, खच्चर आदि।

क्या तुम्हें लगता है कि इन पशुओं में मनुष्य से ज़्यादा ताकत होती है?

इन पशुओं की सहायता के बिना मनुष्य को एक जगह से दूसरी जगह जाने में और एक जगह से दूसरी जगह माल लाने-ले जाने में बहुत कठिनाई होती थी। पशुओं की सहायता से यात्रा करना सरल हो गया। आगे जा कर खेती करने में भी बड़ी सहायता मिली।

क्या तुम बता सकते हो कि पशुओं से खेती में क्या-क्या लाभ मिलता है?

इन सब बातों से मनुष्य का जीवन बहुत बदलने लगा। यह तुम आगे के पाठ में देखोगे।